IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

शासन द्वारा चलायी जा रही योजना का कृषि विकास पर प्रभाव (समाजशास्त्री अध्ययन सीधी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava
Professor, Department of Sociology
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, (M.P), India

सारांश

कोरोनोकाल में केवल कृषि की ही सभी गतिविधियां चलती रही, क्योकि इससे सम्पूर्ण मानव जाति का जीवन जुड़ा है।सही कहा गया है। कि जान है तो जहान है। फैक्टरियां बन्द, कारखाने बन्द, सस्थान बन्द यहां तक कि भगवान के दरवाजे भी बन्द रहे, लेकिन खेती किसानी खुली रही, दूध वाले, सब्जी वाले, दवाई वाले आदि चालू रहे। कृषि कार्य करने वाले हमारे महान कृषक भाई लगातार खेतों में काम करते रहे हैं पर सवाल आता है किसके लिए? तो जवाब बनता है हम सबकेलिए। कृषि के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। ऐसे में बात आती है कि कृषि को मजबूत कैसे बनाया जाए। देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसख्या अपनी आजीविका हेतु कृषि पर ही निर्भर है कृषि की सकल घरेलू उत्पादन में भागीदारी लगभग 22 प्रतिशत है।

मुख्य शब्द– योजना, कृषि विकास प्रभाव, एवं परिवर्तन।

प्रस्तावना:

कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है। यह क्षेत्र निर्धनता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। क्योकि इस क्षेत्र में अधिकांश निर्धन लोग ही कार्यरत है। और यदि कृषि क्षेत्र का विकास होगा तो निर्धनता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। कृषि मानव सभ्यता के प्राचीनतम उद्यमों में से एक है, मानव को सफलतापूर्वक जीवन यापन करने के लिये अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती है, जिनमें से पेट की भूख सबसे अधिक महत्वपूर्ण व्यवसाय माना जाता है। कृषि व ग्रामीण क्षेत्र का विकास और उन्नति किसी भी राष्ट या समाज की प्रगति का सूचक है। देश में आज भी लगभग 65 प्रतिशत रोजगार कृषि के माध्यम से उपलब्ध होता है। भारत के पास धुनिया में 10 वां सबसे बडा संसाधन कृषि योग्य भूमि है। भारतीय किसानों की तरक्की में एक बडी बाधा अच्छी परिवहन व्यवस्था की कमी भी हैं। आज भी देश के कई गांव व केन्द्र ऐसे है जो बजारों और शहरो से नही जुडे हैं। अच्छी फसल के लिये अच्छे बीजो का बेहद होना जरूरी है। लेकिन सही वितरण तंत्र न होने के चलते छोटे किसानो की पहुच में ये महंगे लगते हैं। और इसी कारण इन्हे इस बीजो की गुणवत्ता का फायदा प्राप्त नही हो पाता। प्रारम्भ से ही कृषि क्षेत्र से ही सम्बधित भारत की रणनीति मुख्य रूप से कृषि उत्पादन बढाने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केन्द्रित रही है। जिसके कारण किसानों की आय मे बढोतरी करने पर कभी भी ध्यान नही दिया गया। भण्डार की सुविधाये नही होने के कारण किसानों पर जल्द से जल्द फसल का सौदा करने का दवाब होता है। किसानों की सबसे बडी समस्या उनके कृषि उत्पादों की कम कीमत प्राप्त होती है। बहुत सारे किसान कृषि हेतु पारम्परिक तरीके का इस्तेमान करते है। फलतः इसका अशर कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और लागत पर साफ दिखाई देता है। आजादी के इतने वर्षो बाद भी जमीन का एक बडा हिस्सा बडे किसानों महाजनों और साहूकारों के पास है।जिस पर छोटे किसान काम करते हैं ऐसे मे अगर फसल अच्छी नहीं होती तो छोटे किसान कर्ज में डूब जाते है।

शोध का उद्देश्यः–

1. कृषको की आय बढाने के उपायो का आंकलन करना।
2. किसान विकास कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
3. सरकारी विकास कार्यक्रमों का कृषक कल्याण का अध्ययन करना।
4. कृषिको के समग्र विकास हेतु सुझाव देना एवं उसका अध्ययन करना।
5. वर्तमान मे कृषि विकास की जानकारी प्राप्त करना।
6. कृषि उत्पादन की वृद्धि का अध्ययन करना।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

निदर्शन पद्धतिः

अध्ययन को स्वरूप देने के लिये उद्देश्य पर निर्देशन के अन्तर्गत सीधी जिले का चयन किया गया। सीधी शहर के ग्रामीण इलाकों में रह रहे लोगों का चयन निर्देशन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावलीः

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए सीधी में ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहें लोगों की प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारों को जानने के प्रयास किया गया है तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली को उपयोग किया गया है। जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूचीः

कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहॉ अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण–

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि सीधी जिले के लोगों से कृषि की स्थिति, इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनुसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगो पर विशेष रूप से केन्द्रित है। अध्ययन में लोगों को शामिल किया गया है। जिनमें विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास प्रश्नावली, अनुसूची को भरवाया गया है। तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है। साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप में हॉ, नहीं और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। जो इस प्रकार है।

तालिका क्रमांक 1: क्या शासन द्वारा चलायी जा रही कृषि योजनाओं का कृषि विकास पर प्रभाव पड रहा है।

क.	ग्रामीण निवासी लोग	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	25	50
2	नहीं	50	20	40
3	पता नहीं	50	05	10
	योग–	50	50	100

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्र के क्या ग्रामीण लोगों को शासन द्वारा चलाई जा रही कृषि योजनाओं का कृषि विकास पर प्रभाव पड रहा है में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 25 (50 प्रतिशत) उत्तरदाओं ने कहा कि शासन द्वारा चलाई जा रही कृषि योजनाओं का कृषि विकास हो रहा है। 20 (40 प्रतिशत) उत्तरदाओं ने कहा कि शासन की कृषि योजनाओं से कृषि विकास नही रहा है। 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाओं ने कहा ज्ञात नहीं हैं।

तालिका क्रमांक–2: वर्तमान में किसानो की आय में वृद्धि एवं आर्थिक विकास एवं समाजिक विकास हो रही है।

क.	कृषक	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	27	54
2.	नहीं	50	15	30
3.	पता नहीं	50	8	16
	योग–	50	50	100

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्र में किसान की आय में वृद्धि एवं आर्थिक विकाश व समाजिक विकाश हो रहा है। में कुल न्यादर्शो संख्या 50 में से 27 (54 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि किसानों की आय में वृद्धि व आर्थिक एवं सामाजिक विकाश हो रहा है। 15 (30 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि किसान की आय में वृद्धि व आर्थिक एवं सामाजिक विकास नही हो रहा है। 8 (16 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा पता नही है।

तालिका कमांक–3: क्या ग्रामीण क्षेत्र के लोग कृषि योजनाओं के प्रति जागरूक हैं।

क्र.	ग्रामीण क्षेत्र के लोग	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	33	66
2.	नहीं	50	10	20
3.	पता नहीं	50	07	14
	योग–	50	50	100

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्र के लोग कृषि योजनाओं के प्रति जागरूक है। में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 33 (66 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के लोग कृषि योजनाओं के प्रति जागरूक है। तथा 10 (20 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि योजनाओं के प्रति जागरूक नहीं है। जबकि 07 (14 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि पता नहीं है।

निष्कर्ष:

सरकार ने 2022 तक किसानों की आय को दुगना करने का लक्ष्य रखा है। इस संबंध में फसल बीमा योजना अभूतपूर्व योजना है इस योजना के तहत इस वर्ष 14 हजार करोड के बजट का प्रावधान है।

प्रधानमन्त्री फसल बीमा योजना – यह योजना 13 जनवरी 2016 से लागू हुयी जो किसानों के कल्याण के लिये लीक से हटाकर एक अहम येाजना है। किसानो के लिये बीमा योजनायें समय–समय पर बनती रहती है किन्तु इसके बावजूद भी अब तक कुल कवरेज 23 प्रतिशत ही हो सका है। सभी योजनाओं की समीक्षा कर अच्छे फीचर शामिल कर और किसान हित में नये फीचर्स जोडकर फसल बीमा योजना बनाई। खरीफ पर 2.0 प्रतिशत एवं रवी पर 1.5 प्रतिशत वार्षिक वाणिज्यिक एवं बागवानी फसलों पर 5 प्रतिशत किसान द्वारा देय अधिकतम बीमा प्रभार निर्धारित किया गया है।

भारत में खाद्य समृद्धि के बावजूद जनसंख्या वृ;द्धि के कारण खाद्यान्न की कमी लगातार बनी हुयी है। इसी लिये कृषि कार्य से जुडे किसानों का अधिक उपज और समृद्ध खेती की तरफ रूझान आवश्यक है। खेती को लाभदायक बनाने के लिये दो ही उपाय है। पहला उत्पादन को बढाये और दूसरा लागत को कम करें। कृषि की लागत को कम करने के लिये बीज, उर्वरक पौधा संरक्षण रसायन और सिचाई तंत्र का संतुलित और आधुनिक विधियों का प्रयोग कर खेती को किसानों हेतु लाभदायक बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. कृषि अर्थशास्त्र– डॉ. जयप्रकाश मिश्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
2. दैनिक भास्कर, जबलपुर, दिनांक 3 जून 2020, पृ. 8
3. कृषक वन्दना, सितम्बर 2020 पत्रिका, आधारताल, जबलपुर।
4. बदलता ग्रामीण परिवेश– अलोने चन्द्रशेखर इंडियन स्टीम्स रिसर्च जर्नरल, जनवरी 2015
5. कृषि विकास और कल्याण – डॉ. वीरेन्द्र कुमार, प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर 2019 पृ. 95
6. भारतीय आर्थिक नीति– कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल (म.प्र.)।